ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-2* May- 2020
Anthology : The Research

जीवन प्रबंधन में राम काव्य की भूमिका
Role of Ram Poetry in Life Management

Paper Submission: 10/05/2020, Date of Acceptance: 20/05/2020, Date of Publication: 22/05/2020

सियाशरण ज्योतिषी
सह–प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
नैनपुर, मंडला, म.प्र., भारत

सारांश

रामकाव्य में श्रीराम विष्णु के अवतार हैं, वे आदि पुरूष हैं जो मानव मात्र की भलाई के लिए मानवीय रूप में इस धरा पर अवतरित हुए। मानव अस्तित्व की कठिनाईयों तथा कष्टों का उन्होंने स्वयं वरण किया जिससे सामाजिक व नैतिक मूल्यों का संरक्षण किया जा सके तथा दुष्टों को दण्ड दिया जा सके। श्रीराम हमें देवत्व शक्ति के प्रति विश्वास से ओत–प्रोत करते हैं। राम के जीवन में कहीं भी अपूर्णता दिखाई नहीं देती है। जिस समय जैसा कार्य करना चाहिए राम ने उस समय वैसा कार्य किया। राम रीति, नीति, प्रीति तथा भीति सभी जानते थे। राम परिपूर्ण हैं, आदर्श हैं। राम के साथ रामकाव्य के सभी पात्रों ने नियम, त्याग का एक आदर्श स्थापित किया है। राम ने ईश्वर होते हुए भी मानव का रूप रचकर मानव जाति को मानवता का पाठ पढ़ाया, मानवता का उत्कृष्ट आदर्श स्थापित किया।

In Ramakavya, Shri Ram is an incarnation of Vishnu, he is the primitive man who descended on this earth in human form for the good of human beings. He himself described the difficulties and sufferings of human existence so that social and moral values could be protected and punished the wicked. Shriram instills us with faith in the power of divinity. Incompleteness is not seen anywhere in Rama's life. Rama did the work as he should. Ram knew all customs, policy, love and love. Ram is perfect, ideal. All the characters of Ramakavya with Rama have established the norm, a model of renunciation. Ram, despite being God, taught humanity to humanity by creating a human form, setting the ideal of humanity.

मुख्य शब्द : राम काव्य, भारतीय संस्कृति, जीवन प्रबंधन, मानवता ।
Ram Poetry, Indian Culture, Life Management, Humanity

प्रस्तावना

''भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते हैं तो इसी तुलसी महानुभाव को ही। इसमें व्यक्तिगत साधना के साथ लोक धर्म और जन–जीवन की अत्यंत उज्जवल छटा विद्यमान है।''

–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भले ही 'रामचरित मानस' स्वान्तः सुखाय' के निहित उद्देश्यों को लेकर लिखा गया हो, किन्तु उसमें इतनी समष्टिगतता आ गई है कि यह जनजीवन का आदर्श काव्य बन गया। यदि जनजीवन में रामचरित मानस की भूमिका पर दृष्टिपात किया जाये तो उसकी व्यापकता पर कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती। यह 'सर्वहिताय' काव्य बन गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

संस्कृति के विवधि सोपानों का नई पीढ़ी को ज्ञान कराना इस शोध का मूल उद्देश्य है। हम राम काव्य में आदर्श की स्थापना परम्परा पर देखते हैं और यही कल्पना करते हैं कि भावी पीढ़ी इन आदर्शों पर चलकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में इस काव्य को महत रूप में स्वीकार करेगी।

हमारी भारतीय संस्कृति का विरासतन गुण है कि किसी कार्य को प्रारंभ करने के पूर्व–ईश्वर आराधना के भाव जन–जन कि रग–रग में पाया जाता है।

रामचरित मानस में इस भावनात्मक पहलू को विशदता के साथ वर्णित किया है। जिसे पढ़कर, सुनकर जनमानस उसमें तल्लीन हो जाता है, भाव विभोर हो उठता है। जनजीवन में ईश्वर–वंदना सफलता का परिचायक है, इसकी प्रतीति रामचरित मानस में कुछ इस तरह कराते हैं–

जेहि सुमरत सिधि होई, गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोई, बुद्धि राशि शुभ गुन सदन।।

रामचरित मानस के भक्ति सरोवर में जनता को रसामृत पान कराके तुलसी ने उन्हें युगों तक अमर बना दिया है। काम–क्रोध–लोभ–मद और मोह मनुष्य के प्रबल शत्रु हैं, इनका मर्यादित रूप जन–जीवन के लिये आवश्यक नहीं, अनिवार्य भी है। इनकी अतिशयता, अवांछनीय एवं त्याज्य है। रामचरित मानस में रावण और शूर्पणखा ने काम की मर्यादा को अतिक्रमण किया किन्तु उन्हें उचित दंड भी दिया गया। नारद के रूप मद पर उन्हें जग हंसाई का पात्र बनना पड़ता है। रावण और परशुराम में मद की अतिशयता इस हद तक है कि उन्हें यथार्थ का ज्ञान तक नहीं रहता। परशुराम का क्रोध हास्यास्पद है, किन्तु समुद्र के प्रति राम द्वारा प्रगट क्रोध सराहनीय है। मर्यादा और आदर्श की प्रतिष्ठापना से जिन नैतिक मूल्यों की स्थापना 'रामचरित मानस' में की गई है, वे जनता के मनोबल को बढ़ाने वाले हैं। रास्ते पर आगे बढ़ने वाले हैं। जनजीवन की व्यापकता पर आचार्य शुक्ल के विचार हमें इस दृष्टि के निकट ला देते हैं–

''तुलसी के रामचरित मानस में जो शील, शक्ति, सौंदर्यमयी स्वछन्द धारा निकलती है, उसमें जनजीवन की प्रत्येक स्थिति में भगवद स्वरूप के प्रतिबिंब की झलक मिलती है। राम के आदर्श को हम राजा–रंक, धनी–दरिद्र, मूर्ख–पंडित सबके हृदय और कंठ में सब दिन के लिए बसा पाते हैं। रामचरित मानस की ही देन है कि आज जन–जीवन में किसी न किसी रूप में हम राम को पाते हैं। सम्पत्ति में, विपत्ति में, वन में, रण क्षेत्र में, आनंदोत्सव में और सर्वत्र कहीं दूर–दूर तक। ''रामचरित मानस की भूमिका निरापद है कि इसकी प्रेरणा से जनता के अवसर के अनुकूल सौंदर्य पर मुग्ध होती है, महत्व पर श्रृद्धा रखती है, शील–सन्मार्ग पर पैर रखती है, विपत्ति में धैर्य धरती है, कठिन कर्म में उत्साहित होती है, दया में आर्द्र होती है, बुराई पर ग्लानि करती है।''

सकल जन–जीवन को राममय बना देने की संकल्पना क्या कम महत्वपूर्ण है। मानस में भारतीय समाज मुखरित हो उठा है। 'सियाराममय सब जग जानी' के अन्वेषक तुलसी ने रावणत्व पर रामत्व की विजय का जो शंखनाद किया है, वह आसुरी प्रवृत्तियों पर हमारी विजय मात्र नहीं है वरन विश्व समाज व जनजीवन के लिए पथप्रदर्शिका भी है। यह वह आलोक है, जो गांधी जी का पथ प्रशस्त करता है, जहाँ से हमने स्वतंत्रता का सबेरा देखा है, जाति–पाँति का भेद भुलाया है, नारी सम्मान को नतमस्तक किया है, शोषक वर्ग से निजात पाया है और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में सर्वत्र भारत का परचम लहराया है।

आदर्श समाज के लिए वर्ण–व्यवस्था का पालन आवश्यक है, जो मर्यादित हो। मर्यादा के बिना समाज उच्छृंखल हो जाता है।

''वरनाश्रम निज धरम, निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं, नहिं भय शोक न रोग।।

कहकर तुलसी मर्यादित वर्ण व्यवस्था पर जोर देते हैं। आज इसे परिवर्तित स्वरूप में स्वीकार कर सकते हैं। तुलसी के समय का समाज नैतिक, धार्मिक, साँस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से ह्रासोन्मुख था। ऐसे समाज के लिए उन्होंने विचार–पद्धतियों, साधनाओं, विरोधी संस्कृतियों और विभिन्न जातियों में सामंजस्यवाद का विराट आदर्श उपस्थित किया। यही समन्वय जनजीवन के लोक मंगल की जड़ें मजबूत करने में सहायक साबित होता है। रामचरित मानस– लोक और शास्त्र, गृहस्थ और वैराग्य, भक्ति और ज्ञान, भाषा और संस्कृत, निर्गुण और सगुण, पांडित्य और अपांडित्य के समन्वय की विराट चेष्टा है। मानस की इस समन्वयकारी दृष्टि में हम अपने को आत्मसात कर जनजीवन के लिए नया चिंतन पाते हैं कि जनजीवन में लोकधर्म और लोक नेतृत्व के दायित्व का पालन हम कैसे करें।

रामचरित चरित मानस के सात सोपानों में जनजीवन के सूक्ष्म पक्षों का विधिवत उद्घाटन हो सकता है। राजा दशरथ और राजा जनक के आदर्श परिवार की धरोहर से मानस में एक आदर्श परिवार की स्थापना कैसे संभव है, का खुला उत्तर पाते हैं। राम जन्म से लेकर राम विवाह, राज्याभिषेक, कैकयी का कोप, वनवास, केवट का गंगा पार कराना, शबरी–अनुसुईया का प्रसंग, सीताहरण, हनुमान जी का लंका दहन, राम–सुग्रीव की मैत्री, सेतुबंध विभीषण का राज्याभिषेक, राम का लंका पर आक्रमण और रावण वध के उपरांत राम–राज्य की स्थापना 'रामचरित मानस' में फलागम की स्थिति है। इस कथा संयोजन में जनजीवन के चित्रण का कोई भी ऐसा पक्ष या प्रसंग अछूता नहीं रह गया है जिसे तुलसी की दृष्टि ने छुआ न हो। इसके अतिरिक्त प्रातः से लेकर रात तक के दैनिक जनजीवन की दिनचर्या का वर्णन रामचरित मानस में किया गया है। जलभरती मनोहर पनहारिनें, गाय चराते ग्वाले, कृषि कार्य के लिये कर्म पर निकले कृषकों, वनों ऋतुओं, झरनों नदियों, बारात देखने उमड़े जन समुदायों कोल–किरात–भील की टोलियों, वाटिकाओं,

बिहारों, वानरों सैन्य दलों इत्यादि के जन–जीवन की विविधताओं से रामचरित मानस का काव्य परिपूर्ण है।

सद्गुरू शरण अवस्थी के शब्दों में– ''यदि तुलसी भारतीय संस्कृति के कीर्ति हैं तो रामचरित मानस स्तंभ। मर्त्य और स्वर्ग का ऐसा अनूठा सोहाग विश्व के साहित्य में कदाचित ही मिले।'' रामचरित मानस की जनजीवन से अभिन्नता इस बात से स्वतः सिद्ध हो जाती है जब विदेशी विद्वान नौक्स को कहना पड़ता है–

भारत का किसान भी दूसरे देशों के नेताओं से अधिक संस्कृत है। इस बात का श्रेय बिना किसी पक्षपात के तुलसी और मानस को दिया जा सकता है क्योंकि आज के भारत का धर्म और संस्कृति, तुलसी–सम्मत धर्म और संस्कृति है।''

निष्कर्ष

रामकाव्य भारतीय जनमानस के हृदय में व्याप्त निराशा की गहराई को आशा में पल्लवित किया है। रामकाव्य ने मानव जीवन को प्रत्येक दृष्टि से चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया है। इस काव्य के प्रत्येक पात्रों के चरित्र चित्रण प्रतिभा सर्वोत्मुखी हैं। राम मर्यादा पुरूषोत्तम तथा आदर्श चरित्र प्रधान हैं। भाई, पुत्र, पति आदि सभी रूपों में आदर्श हैं। दशरथ आदर्श पिता, कौशल्या आदर्श माता, सीता आदर्श पत्नी, लक्ष्मण व भरत आदर्श भाई और हनुमान आदर्श भक्त हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *रामचरित मानस–तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर उ. प्र.*
2. *रामादर्श– डॉ. रामचिंतक, हिंदू परिषद वाराणसी उ.प्र.*
3. *राम तुम्हारा चरित्र ही आदर्श है, डॉ. आर.जी. दीक्षित– समाचार दर्शन, जिला–मण्डला म.प्र.*
4. *हिंदी साहित्य, युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली–6*